न्यीशी लोक कथाओं का विभिन्न दृष्टियों से अध्ययन

जोराम आनिया

लोक कथा, लोक साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है। यह विधा केवल मनोरंजन करने तक सीमित न होकर जन-मानस में आत्मविश्वास की भावना को जागृत करती है। उन्हें जीवन में संघर्ष से जूझने और आपदाओं में स्थिर रहने की शक्ति प्रदान करती है। दुःखी मन इन कथाओं को सुनकर अपना संताप भूलता आया है। इन कथाओं के सहारे उसने अपनी कल्पनाओं के सुंदर से सुंदर चित्र संजोए हैं। 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना को फैलाने में भी लोक कथाओं की विशेष भूमिका रही है। अरुणाचल प्रदेश की न्यीशी लोक कथाएं भी इसका अपवाद नहीं हैं। लोक कथाओं में जो ऐतिहासिक तत्त्व है, समकालीन परिस्थितियों का जो प्रभाव है, उसे नकारा नहीं जा सकता। इनका मनोरंजन-पक्ष तो सर्वोपरि है ही। यही कारण है कि विश्व के सभी भागों में लोक कथाएं अनंत काल से कही-सुनी जाती रही हैं और आज भी उनका महत्त्व कम नहीं हुआ है। लोक कथा ही एक सरल साधन है, जिससे किसी भी देश के लोक-जीवन और संस्कृति का सुगमता से अनुमान किया जा सकता है। लोक कथाओं में वहां के आचार-विचार की झलक तो मिलती ही है, समाज का चित्र भी नज़र आता है, साथ ही वहां के रीति-रिवाजों और धार्मिक विश्वासों का भी बोध होता है। लोक कथाओं में जनता की युग-युग की अनुभूतियों का निचोड़ संचित रहता है, अतएव किसी भी राष्ट्र के सांस्कृतिक नवोत्थान में उनका विशेष महत्त्व है।

न्यीशी जनजातीय समाज का आधार आबोतानी है, जिसे इस समुदाय के लोग अपना पिता मानते हैं। अधिकतर कहानियों में मुख्य अथवा गौण चरित्र के रूप में आबोतानी आ ही जाते हैं। मोटे तौर पर न्यीशी आदिवासी समाज में कई प्रकार की कथाएं सुनने को मिलती हैं। ऐतिहासिक लोक कथाएं, वीरता और साहस की ऐतिहासिक कथाएं, हास-परिहास की कथाएं, बेवकूफी और चालाकी की कथाएं, अंधविश्वास की कथाएं, पशु-पक्षियों की कथाएं, नीतियुक्त उपदेशात्मक कथाएं तथा पारिवारिक एवं सामाजिक रिश्ते-नातों की कथाएं आदि। ध्यातव्य है कि न्यीशी समाज में बहु-पत्नी प्रथा रही है, इसलिए इनकी लोक-कथाओं में पारिवारिक रिश्ते और सामाजिक व्यवहार के किस्से तो मिलते हैं, लेकिन सौतेली माँ से संबंधित कथाओं का अभाव पाया जाता है।

ऐतिहासिक लोक कथाएँ

न्यीशी जनजातीय समाज का आधार आबोतानी है, जिसे इस समुदाय के लोग अपना पिता मानते हैं। अधिकतर कहानियों में मुख्य अथवा गौण चरित्र के रूप में आबोतानी आ ही जाते हैं। ऐतिहासिक लोक कथाओं में मनुष्य से लेकर देवी-देवता, भूत-प्रेत, राक्षस, पशु-पक्षी, कीट-पतंग जीवन-मृत्यु आदि की उत्पत्ति का वर्णन मिलता है, साथ ही भूत-प्रेत, मनुष्य और देव-दानव के बीच द्वंद्व तथा उसके परिणाम में नाना पूजा विधि की उत्पत्ति का भी वर्णन मिलता है। इसके अलावा पूजा-पाठ आदि धार्मिक गतिविधियों का उल्लेख भी इनमें देखने को मिलता है। इस प्रकार की कथाओं के उदाहरण के रूप में बरम दीमिन, ताई बिड़ा, नीमा और निया, मृत्यु की उत्पत्ति, रुई की उत्पत्ति, आबोतानी और रोव पचा- I, II, और III को देखा जा सकता है। यथा 'मृत्यु की

उत्पत्ति' शीर्षक कहानी में न्यीशी जनजाति में मृत्यु एवं उसके बाद की गतिविधियों की शुरुआत कैसे हुई, इसका वर्णन है-

एक बार बहुत भयानक ओलों-भरा विनाशकारी तूफ़ान आया। बहुत सारे पेड़ उखड़ गए थे। चूंकि सभी प्राणियों को पता था कि ऐसा विनाशकारी तूफान आने वाला है, इसलिए सबने पहले ही अपने बचाव की जगह खोज ली थी। लेकिन इस तूफान में एक चिड़िया के सारे अंडे नष्ट हो गए थे, इसलिए वह बहुत दु:खी थी और शोक में रोते हुए प्रलाप कर रही थी। आबोतानी को दूर से आता हुआ यह प्रलाप किसी मधुर संगीत की तरह लग रहा था। वह करीब जाकर इसका आनंद लेना चाहते थे, लेकिन उन्हें जित्त-अन और चित्तुम बोतह द्वारा ऐसा न करने की चेतावनी दी।

आबोतानी जिद्दी और मनमौजी स्वभाव के थे। उन्होंने यदि कोई काम ठान लिया, तो उन्हें कोई रोक नहीं सकता था। सो वे तुरंत शोक में डूबी चिड़िया के पास जा पहुँचे और उससे पूछा कि, आखिर वह इतने मीठे स्वर में क्यों गा रही थी? चिड़िया ने रोते हुए कहा कि, मैं गा नहीं रही, शोक में प्रलाप कर रही हूँ। आपको मेरे पास ऐसे समय में नहीं आना चाहिए था। आबोतानी ने कहा कि, मैं तो आपका दु:ख साझा करने यहाँ आया था, लेकिन चिड़िया तानी को इसमें भागीदार नहीं बनाना चाहती थी, क्योंकि वह जानती थी कि यदि उसने अंडों के नष्ट होने के बारे में बताया तो पृथ्वी मानव-जीवन जो अभी तक अजर-अमर था, उन्हें दु:ख-दर्द और मृत्यु का ज्ञान हो जाएगा, उनकी भी एक समय बाद मृत्यु होनी शुरू हो जाएगी। लेकिन जिद्दी तानी बिना जाने मानने वाले नहीं थे। आखिर, चिड़िया ने तानी से यह कहते हुए कि, आपकी जिद के कारण मनुष्य के लिए आज का दिन बेहद अभिशापित बन गया है खैर! उसने तानी के साथ अपनी व्यथा साझा की, जिसके बाद वे वापस लौट गए। जब आबोतानी अपने आवास पर पहुंचे, तो सभी ने उसे मौत की उत्पत्ति कर देने के कारण फटकार लगाई, जो कि उस समय तक मानव के लिए अज्ञात थी।

सबसे पहले जित्त-अन और चित्तुम बोतह को एहसास हुआ कि आबोतानी की मृत्यु होने वाली है, क्योंकि वे बहुत बूढ़े हो चले थे। दोनों को पहली बार मृत्यु और उसके बाद की प्रक्रिया की चिंता हुई। तब उन्होंने कहा कि आबोतानी के मरने के बाद उन्हें पृथ्वी में दफ़न किया जाएगा। चूंकि आबोतानी न्यीशी लोगों के देवता हैं, इसलिए उनके बाद न्यीशी लोगों में में भी मृतकों को दफनाने का चलन शुरू हुआ।

रीति-रिवाज संबंधी लोक कथाएँ

रीति रिवाज ऐसी परंपराएँ या संस्कार हैं, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी मानव जाति में चले आ रहे हैं। इनका संबंध दैनिक -चर्या या जीवन की प्रमुख घटनाओं से होता है। कभी-कभी तो धर्म और त्योहार का भी हिस्सा होता है। न्यीशी समाज में प्रचलित रीति-रिवाजों के लिए भी अनेक लोक कथाएँ कही जाती हैं, यथा-बरम दीमिन, कादो और कागर, आबोतानी और आत्मा तथा आबोतानी और अकाल।

आबोतानी और आत्मा कहानी के अनुसार न्यीशी जनजाति में धार्मिक पूजा-पाठ की शुरुआत कैसे हुई, इसका पता मिलता है। इसी तरह रिखाम जाम और अकाल से यह जानकारी मिलती है कि न्यीशी जनजाति के लोग कभी भी अपना भंडार-गृह पूरी तरह खाली क्यों नहीं करते हैं। न्यीशी बुजुर्गों के कहेनुसार, आबोतानी और आत्मा कहानी में आबोतानी को यह पता था कि प्रेतात्माओं द्वारा उसकी और उसकी संततियों के पृथ्वी पर जीवित होने को सहजता से नहीं लिया जाता। उन्हें लगता था कि आबोतानी और उसकी संततियों का निर्वाह

उसके रक्षक पर निर्भर था। प्रेतात्माएँ बहुत सावधानी से इसकी निगरानी कर रही थी, क्योंकि उन्हें पता था कि आबोतानी के पास अदृश्य चीजों को देख पाने की अलौकिक शक्ति थी। काफ़ी सोच विचार कर प्रेतात्माओं ने आबोतानी के इस शक्ति को छीनने की योजना बनाई।

आबोतानी को अलौकिक शक्तियाँ तो अर्जित थीं, पर आखिरकार वह एक इंसान था, जिसकी अपनी विशेषताएँ और कमजोरियाँ दोनों थीं। इसी दौरान आबोतानी ने उन प्रेतात्माओं से पेड़ों की लटकी जटाओं पर झूलते हुए ये चर्चा सुनी कि वे कैसे कुछ दूरी पर स्थित खूबसूरत घाटियों को देख रहे हैं और वहाँ के लोग कितने सुंदर दिखते हैं? कुछ दूरी पर। इन चर्चाओं को सुनकर आबोतानी सुंदर घाटियों और प्यारे लोगों को देखने के लिए इतना उत्सुक हो गया कि वह एक बार के लिए भूल गया कि ये उसे मारने की कोई चाल हो सकती है। आबोतानी यह अनुरोध करते हुए उस ओर चल पड़ा कि उसे भी प्रेतात्माओं की तरह झूलने की अनुमति दी दी जाए। योजना के अनुसार कुछ समय तो प्रेतात्माओं ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया, लेकिन आखिरकार उन्होंने आबोतानी को झूला झूलने की अनुमति दे दी। घाटियों में किसी को नहीं पाकर, आबोतानी झूलते हुए नीचे आना चाहता था, लेकिन वह नीचे आने से पहले रुक गया और उसने अपनी अदृश्य को देखने की अपनी शक्ति से देखा कि झूले को काटने के लिए नीचे की ओर नुकीले बांस लगाए हुए थे। जब आबोतानी को समझ में आया कि वह कितना मूर्ख है और अब वह सिर्फ़ प्रेतात्माओं की दया पर निर्भर था। लेकिन अब उसके पास जाने का कोई और रास्ता नहीं था। प्रेतात्माओं ने आबोतानी से उसकी इस अलौकिक शक्ति की मांग की। पहले तो आबोतानी ने इसके बारे में अनभिज्ञ होने का नाटक किया, लेकिन आखिरकार वह टूट गया। उसने प्रेतात्माओं से कहा कि उसने अपनी शक्ति को नीचे पत्तों में रख दिया है, आप ले लो। प्रेतात्माओं ने उसे खोज लिया और तुरंत चाट गए।

आबोतानी कुछ समय बाद किसी तरह झूले से उतरा और जल्दी से वहाँ पहुंचा, जहाँ उसने अपनी शक्ति को छिपाया था, लेकिन उसने पाया कि वहाँ कुछ भी नहीं बचा था। फिर भी उसने इस उम्मीद के साथ पत्तों को चाट लिया कि उन पर कुछ शक्ति लगी हो सकती है। कुछ नहीं से कुछ तो बेहतर है।

परिणामस्वरूप प्रेतात्माओं को सारी अलौकिक शक्तियाँ मिल गईं और आबोतानी एक साधारण इंसान बन गया। उसके बाद से आबोतानी और उनकी संततियों को प्रेतात्माएँ दिखनी बंद हो गईं, जबकि वे उन्हें देख सकती थीं। कुछ समय के लिए सब सामान्य रहा, लेकिन आबोतानी ने ताड़ के पत्तों को चाट लिया था, इसलिए तब से केवल न्यीशी पुजारी ही प्रेतात्माओं को देख सकते हैं और अगर कोई प्रेतात्मा किसी आबोतानी की किसी यानी न्यीशी लोगों को परेशान करती है तो पुजारी अपनी अलौकिक शक्ति के माध्यम से प्रेतात्मा का पता लगाकर उसका उपचार कर सकते हैं। तब से लेकर आज तलक प्रेतात्माओं और आबोतानी के वंशजों के बीच पीढ़ियों से संघर्ष चला आ रहा है।

उपदेश संबंधी लोक कथाएँ

लोककथाओं में मानव कल्याण के लिए विभिन्न प्रकार के उपदेश भरे पड़े हैं। ऐसी कथाएँ प्राय: अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षा देती हैं। इसलिए ऐसा आभास नहीं होता कि उनका निर्माण उपदेश के लिए ही किया गया होगा। इनके माध्यम से गृहकलह एवं सामाजिक बुराइयों से बचने के लिए प्रेरणाएँ मिलती हैं। ऐसी बहुत सी कथाएँ हैं, जिनमें परिवार को विभिन्न प्रकार के कष्टों का भाजन होना पड़ा है। कथा के नायक को तथा उससे

संबंध रखने वालों को विभिन्न संघर्षों का शिकार होना पड़ता है। पर ये सभी कथाएँ अंत में सुख एवं संयोग में समाप्त होती हैं। जब तक कथा समाप्त नहीं होती तब तक पात्रों और मुख्य रूप से नायक को इतनी भयानक घटनाओं में फँसा देखा जाता है कि सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। उन्हें ये सारी घटनाएँ सही मालूम पड़ती हैं। न्यीशी लोककथाओं में नीतिपरक उपदेशात्मक कथाएं काफ़ी देखने-सुनने को मिलती हैं, इनमें लोक व्यवहार के कई ऐसे पात्र दृष्टिगोचर होते हैं जिनसे समाज में अच्छे-बुरे कर्मों के लिए दण्ड और वरदान जैसे विधि-विधान के माध्यम से बुराई से बचने और अच्छाई की ओर अग्रसर होने के उपदेश मिलते हैं। डोजिंग यसिंग, लूरम बर्ज, लिन्खी सोज आदि इसका जीवंत उदाहरण है। उदाहरण के लिए 'डोजिंग यासिंग' की कथा प्रस्तुत है।

यह एक भाई और बहन की कथा है। वे बहुत गरीब थे। वे किसी तरह अपनी थोड़ी सी खेती पर गुजर करते थे। वे गरीबी के कारण शादी नहीं कर पा रहे थे। एक दिन एक खूबसूरत लड़की भाई के पास आई और उसने भाई के सामने शादी करने का प्रस्ताव रखा। उसने कहा कि शादी के बाद उसके पति को काम करने की जरूरत नहीं पड़ेगी क्योंकि वह जादुई शक्तियाँ रखती है। पर उसने एक शर्त रखी कि उसे अपनी बहन की हत्या करनी होगी क्योंकि वह और उसकी ननद एक-साथ नहीं रह सकते। भाई ने लड़की का प्रस्ताव ठुकरा दिया। लेकिन वह लड़की अपने प्रयास में लगी रही और एक दिन भाई ने उसकी बात मान ली और भाई ने बहन का सिर काटकर उसकी हत्या कर दी। हत्या के बाद वह उसके लिए न्यिबुंग बनाने चला गया। न्यिबुग बनाकर जब कुछ देर बाद जब वह लौटा तो उसने पाया कि उसकी बहन का शव गायब था। वह घबरा गया और शव की खोज में इधर-उधर भटकने लगा। तभी उसने देखा कि उसकी बहन का शव एक बरगद के पेड़ पर लटका हुआ था और उसे डोजिंग यासिंग खा रहा था। तब उसे अहसास हुआ कि डोजिंग यासिंग और कोई नहीं, एक आत्मा है। इसके बाद भाई को एहसास हुआ कि उसे शादी की चाहत एक खूबसूरत लड़की की आड़ में डोजिंग याशिंग द्वारा मूर्ख बनाया गया है। इस घटना के बाद भाई को बेहद अफसोस और पीड़ा हुई। उसे कहीं भी शांति नहीं मिलती। वह जहां भी जाता, उसकी बहन की आत्मा एक चिड़िया के रूप में उसका पीछा करती और यह कहते हुए चिढ़ाती- 'भाई, आपके लिए डोजिंग द्वारा एक पूरी डेगची भरकर चावल पकाए हुए हैं। क्या उसने आपके लिए अपने यहाँ उपजी थोड़ी सी मकई की भी शराब बना डाली है?' न्यीशी यों का विश्वास है कि आज भी चिड़िया उसे चिढ़ाती रहती है।

न्यीशी जनजाति की मान्यता के अनुसार प्रकृति का दोहन करना पाप है, यानी आप प्रकृति की संतान हैं, उससे जीवन जीने के लिए जितनी जरूरत है, उतना तो ले सकते हैं लेकिन बेहिसाब लेने लगोगे तो आप सजा के पात्र बनेंगे। लूरम-बर्ज नामक लोककथा इसी बात को दर्शाती है। यह एक सुंदर और युवा लड़की की कथा है, जो अपने माता-पिता के साथ रहती थी। उसका नाम बर्ज था। वह जितनी सुंदरी थी, उतनी ही अपने कामों में दक्ष।

एक बार खेतों से लौटते समय वह मछलियों से भरी एक टोकरी अपने साथ लाई। पर किसी ने उसे गंभीरता से नहीं लिया है, लेकिन जब वह इसे नियमित अभ्यास की तरह करने लगी तो उसके माता पिता को चिंता होने लगी। न्यीशी समाज में एक समय में मछली की इतनी भारी मात्रा में पकड़ने वाले व्यक्ति अथवा उसके परिवार के लोगों के लिए अशुभ संकेत माना जाता है। माता पिता ने उसे सलाह दी और उसे नियमित

रूप से मछली नहीं पकड़ने को कहा। लेकिन बर्ज ने उनकी इस सलाह पर ध्यान नहीं दिया और वह पहले की तरह टोकरी भर-भरकर मछलियाँ लाना जारी रखा।

इसी तरह कुछ दिन चलता रहा। एक दिन जब वह परिवार के एक बच्चे के साथ मछलियाँ पकड़कर लौटने वाली थी, तभी तालाब के किनारे पड़ा रहने वाला विशाल पत्थर अचानक लुढ़का और उसके बर्ज का रास्ता रोक लिया। जब वह देर तक घर नहीं लौटी तो उसके माता पिता को चिंता हुई, वे उसे खोजते हुए तालाब पर आए और देखा कि एक पत्थर ने बर्ज का रास्ता रोका हुआ है। तमाम प्रयासों के बावजूद वे लूरम (पत्थर) को नहीं तोड़ पाए, वह तीन-चार महीने तक उस विशाल पत्थर की कैद में रही और अंतत: वह रहस्यमय पत्थर की कैद में भुखमरी से मर गई।

अर्थ एवं व्यापार संबंधी लोक कथाएँ

न्यीशी समाज में व्यापार अथवा अर्थ संबंधी कथाएँ भी पाई जाती हैं, जैसे बरम दीमिन, दो बहनें आदि कथाओं में आए प्रसंगों को इस संदर्भ में खासतौर पर देखा जा सकता है। अरुणाचल प्रदेश में न्यीशी जनजाति वीरता, साहस, पराक्रम आदि के लिए चर्चित है तथापि इनका समुदाय अत्यंत संघर्षशील रहा है, ऊँची पहाड़ियों एवं दुर्गम जंगलों में निवास करने के साथ-साथ, कठिन जीवन स्थितियों, वातावरण और प्रकृति के घात-प्रतिघात का प्रतिबिंबन न्यीशी जनजाति की लोक कथाओं में दिखाई पड़ता है। इमिनदीमिन, किमिनरिंक, बरम दीमिन आदि अनेक लोक कथाएँ इसका ज्वलंत उदाहरण हैं।

न्यीशी जनजाति के जीवन संघर्ष से संबंधित एक लोककथा 'बरम दीमिन' का कथा सारांश यहाँ प्रस्तुत है। यह बरम दीमिन नाम की एक लड़की की कथा है, जो अपने दो भाईयों और विधवा मां के साथ रहती थी। परिवार की इकलौती बेटी होने के नाते उसे अपने भाईयों और माँ से खूब लाड़-प्यार मिलता था। इस लाड़-प्यार से उसमें एक जिद्दीपन विकसित होता गया और बड़ी होकर वह बेहद अकड़ू स्वभाव की बन गई।

एक दिन उसके भाई व्यापार और वाणिज्य के लिए नियामनेपा (ऊँची पहाड़ियों से परे उत्तर में एक जगह) जाने की तैयारी कर रहे थे, तो बरम दीमिन भी उनके साथ जाने की इच्छा जताई। इलाके की प्रकृति, खड़ी पहाड़ियों और रास्ते पर खतरे की संभावना को देखते हुए भाइयों ने उसे साथ ले जाने से बचने की कोशिश की। पर वह अपनी जिद पर अड़ गई। आखिर भाइयों को कुछ शर्तों के साथ ले जाने के लिए सहमत होना पड़ा। शर्त ये थी कि उसे रास्ते के दौरान दिखने वाली किसी भी चीज को लेकर कुछ नहीं बोलना है, न किसी आवाज की नकल करनी है, न ही कोई गीत आदि गाना है, किसी अदभुत दृश्य पर आश्चर्य व्यक्त नहीं करना है और किसी भी हालत में किसी डरावने जानवर आदि को देखकर डर नहीं दिखाना है। वह इन शर्तों को मानने के लिए राजी हो गई।

वे घर पर अपनी बूढ़ी मां को छोड़कर नियामनेपा के लिए निकल पड़े। लेकिन रास्ते में बरम दीमिन सारी शर्तें भूल गई और उनके विपरीत काम करने लगी। खैर, वे हमेशा की तरह नियामनेपा पहुंच गए और अपने काम को पूरा करने के बाद वापस घर की ओर लौटने लगे। चूंकि यह एक महीने से भी अधिक का लंबा दुरूह सफर था, इसलिए उनको जगह-जगह रुकना पड़ा। एक बार ऐसे ही ये लोग एक बरगद के पेड़ के नीचे ठहरे हुए थे। रात को डेढ़ बजे के आस-पास बरगद के पेड़ की एक जड़ निकली और बरम दीमिन को इस तरह जकड़ लिया कि उसका हिलना-डुलना मुश्किल हो गया।

उसके दो भाइयों ने चाकू की मदद से उस जड़ को काटकर रिंके को बचाने की कोशिश की, लेकिन वे जितना उसे काटते, जड़ आश्चर्यजनक रूप से फ़िर बढ़ जाती, वे फ़िर काटते, फ़िर जड़ निकल आती और रिंके को पैरों की ओर से जकड़ लेती। दोनों भाई काटते-काटते थक गए। एक बार उन्हें लगा कि उन्होंने पूरी जड़ काट डाली है, पर फ़िर नई जड़ निकल आई। आखिर उसने रिंके के पूरे शरीर को अपने आगोश में ले लिया। दोनों भाई निराश होने लगे थे।

रिंके समझ गई कि उसके साथ ऐसा क्यों हो रहा था। उसे एहसास था कि यह भाइयों द्वारा उसे दी गई सलाह के अनुपालन नहीं करने के कारण था, जो उन्होंने नियाम नेपा के लिए चलते समय तय किया था। उसे लगा कि अब बचने का कोई रास्ता नहीं था। सो उसने अपने भाइयों से कहा कि वे उसके लिए दु:खी न हों और उसे छोड़कर आगे का रास्ता तय करें। लेकिन भाई उसे यूँ जंगल में अकेला नहीं छोड़ना चाहते थे। जंगली जानवर आकर उसे खा सकते थे। उसने भाइयों से कहा कि वे उसके पास एक धनुष और तीर रख जाएँ ताकि जरूरत पड़ने पर वह जंगली जानवरों को डरा सके। वे उसके पास जरूरत की सारी चीजें छोड़ गए, जैसे ईगिन (न्यीशी औरतों द्वारा पीठ पर ढोई जाने वाली टोकरी), बेम्या (न्यीशी औरतों द्वारा पहाड़ियों पर चढ़ाई करते समय प्रयोग की जाने वाली बाँस की छड़ी), ओपू (फूल) आदि। जाते समय उसके भाई बहुत दुखी थे। रिंके ने उन्हें कहा-हे मेरे भाईयों, तुम मेरी सुरक्षा की चीजें छोड़े बिना मत जाओ। कृपया मेरे साथ ईगिन, बेम्या, चुचा और ओपू छोड़कर जाना। कृपया घर पहुँचते ही माँ को मत बताना कि मैं किस हालत में हूँ। उसे मेरे लिए दुखी मत होने देना, न ही आंसू बहाने देना बल्कि इस हालत का निर्भीकता से सामना करने के लिए प्रोत्साहित करना। यह सब मेरी ही गलती के कारण हुआ। किसी का कोई दोष नहीं है। भाइयों को बहन को इसी हालत में छोड़कर जाना पड़ा। वे जैसे ही घर पहुँचे, माँ ने बेटी को साथ में न देखकर उसके बारे में पूछा। बातों-बातों में भाइयों ने बहन की सारी बात माँ को बता दी। माँ से यह दु:ख बर्दाश्त नहीं हुआ और उसने वहीं दम तोड़ दिया।

पशु-पक्षी संबंधी लोक कथाएँ

हम जानते हैं कि विभिन्न प्रकार के दैविक एवं प्राकृतिक प्रकोपों का भय दिखाकर श्रोताओं को धर्म तथा कर्तव्य-पालन के पथ पर ले आना भी बहुत सी लोककथाओं का लक्ष्य होता है। सारी सृष्टि उस समय एक धरातल पर उतर आती है जब सभी जीव-जंतुओं की भाषा एक हो जाती है। कहीं मनुष्य पशु से बात करता है तो कहीं पशु पक्षी से। सब एक दूसरे के दु:ख-सुख में समीप दिखाई पड़ते हैं। ये बात दुनिया भर की लोक कथाओं में देखी जा सकती है। इन कथाओं की विशेषता यह भी है कि ये मानव जीवन के सभी पहलुओं से संपर्क रखती हैं। न्यीशी जनजाति की लगभग सारी लोक कथाओं में पशु-पक्षियों का आना एक सहज स्थिति है।

इस क्रम में जरपूतेचि जैसी कथा प्रस्तुत है-जरपूतेचि एक ऐसी साहसी युवा लड़की की कथा है, जो किसी से नहीं डरती थी। वह अक्सर अपने खेतों में अकेले ही चली जाया करती और रात को फसलों की जंगली जानवरों, पक्षियों से रखवाली किया करती और खेत में ही वह एक समतल पत्थर पर सोया करती थी। उस पर सोते हुए एक दिन उसे लगा कि वह गर्भवती हो गई है। वह हैरान थी कि यह कैसे हुआ। तभी एक दिन बरको (नाग देवता) प्रकट हुआ और उसने जरपूतेचि को बताया कि एक बार जब वह अपने बिस्तर पर सो रही थी, तो उसने आकर उसके साथ संबंध बनाया और अब जरपू के पेट में उस बरको का बच्चा था। कुछ समय पश्चात

जरपू ने कंकड़ों के बीच एक बच्चे को जन्म दिया और उसे नदी में बहा दिया। कुछ दिनों तक जरपूतेचि और बरको के बीच का गुप्त प्रेम शांति से चला। फ़िर एक दिन जरपूतेचि ने इस संबंध के बारे में अपने घर वालों को बताने की इच्छा जताई। बरको ने शुरू में इस पर आपत्ति की, लेकिन अंत में उसने स्वीकृति दे दी। जब जरपूतेचि ने बरको के साथ अपने संबंध के बारे में अपने माता पिता को सूचना दी, तो उन्होंने इस पर कोई आपत्ति नहीं की, बल्कि बरको को अपने घर पर ससम्मान आमंत्रित किया, क्योंकि बरको अब उनका माकबो (दामाद) बन गया था।

बरको ने इस शर्त पर आने की सहमति जताई कि जब भी वह घर पर आएगा, कोई उसके बारे में कुछ नहीं कहेगा। सबने इस बात को स्वीकार कर लिया। इसी के अनुसार बरको के आगमन की तैयारियां की गईं। परिवार में सभी को इसके बारे में बता दिया गया था। लेकिन किसी तरह परिवार की बूढ़ी औरतों में से एक को यह बात पता नहीं चली या फ़िर वह भूल गई।

नियत दिन पर बरको आया और आंगन में आकर उसने जरपूतेचि से जानना चाहा कि उसे घर के भीतर कैसे आना है। उसने पूछा, "हे तेचि, मुझे किस तरफ से चढ़ना चाहिए, प्लीज मुझे बताओ."

"कृपया बातुंग के माध्यम से आओ", तेचि ने कहा।

इस पर बरको ने उत्तर दिया कि वह बातुंग द्वारा नहीं आएगा, क्योंकि अन्य सारे लोग उसी के माध्यम से गए हैं, इसलिए वह अशुद्ध हो चुका है। उसने फ़िर पूछा, "हे तेचि, मुझे किस तरफ से चढ़ना चाहिए, प्लीज मुझे बताओ."

"कृपया ब्यातु के माध्यम से आओ", तेचि ने कहा।

बरको ने फिर यह कहकर आने से इंकार कर दिया कि वह ब्यातु से नहीं आएगा, क्योंकि इसके माध्यम से शिकार किए हुए पशुओं को अंदर लाया गया है।

अंत में जरपू ने बरको को चूल्हे के माध्यम से आने की सलाह दी और चूल्हे के बगल में मौजूद एक टोकरी में आकर बैठने को कहा। बरको वहाँ आकर आराम से बैठ गया। लेकिन तभी वह बूढ़ी औरत जो भूल गई थी, झाड़ू लगाने आई और टोकरी में बरको को देखकर भय से चिल्लाने लगी- साँप, साँप, साँप। इससे बरको ने खुद को बेहद अपमानित महसूस किया और उसने तुरंत वह जगह छोड़ दी। जरपूतेचि को भी इस बात का बुरा लगा और वह अपने परिजनों के साथ बरको को मनाने पहुँची। बरको का निवास एक झील में था, सो जब जरपूतेचि परिजनों समेत वहां पहुंची तो बरको ने आने से तो इंकार कर दिया पर झील में मौजूद मछली और अन्य जीवों को अपनी पत्नी के रिश्तेदारों के सामने पेश किया। यह देखकर पूतेचि ने भी अपने घर वापस आने से मना कर दिया और वह अपने पति बरको के साथ रहने के लिए झील में चली आई।

न्याय संबंधी लोक कथाएँ

इनमें विभिन्न प्रकार की बुराइयों से उत्पन्न घटनाओं का समावेश होता है। इनमें विशेषकर दो भाइयों के झगड़े एवं दुश्चरित्र और आत्मा की करनी आदि दिखाया जाता है। बाल विवाह, बेमेल विवाह, बहु विवाह, इन कथाओं में मिलती हैं। योग्य या निरपराध व्यक्ति अयोग्य दुष्ट व्यक्ति के चंगुल में फँसकर परेशान होते दिखाई पड़ते हैं। न्याय संबंधी कथाओं में वे कथाएँ अपना विशेष स्थान रखती हैं जिनमें नायिका मुख्य रूप से और

नायक गौण रूप से भयानक परीक्षाएँ देते हैं। ऐसी परीक्षाओं में प्राय: सामाजिक एवं व्यक्तिगत चरित्र को प्रधानता दी जाती है। जिन नायक-नायिकाओं के चरित्र ठीक होते हैं, वे ऐसी कठोर परीक्षाओं में उत्तीर्ण होते दिखाई पड़ते हैं। जैसे सच्चरित्र स्त्री कठिन से कठिन काम को भी उसके अंजाम तक ले जाती है, उसके भय से बड़े बड़े दैत्य-दानव, आत्माएँ तथा भूत-प्रेत पास नहीं फटकते। इसी तरह चरित्रवान् नायक चाहे वह मानव रूप में हो या पशु-पक्षी रूप में, वे भी विकट परीक्षाओं में उत्तीर्ण होकर अपने लक्ष्य की प्राप्ति करते हैं।

तादो-तोकू नामक लोककथा इसका जीवंत उदाहरण है। यह एक व्यक्ति की कथा है, जो अपनी दो बेटियों के साथ रहता था। पिता को शिकार का बहुत शौक था। वह अक्सर शिकार खेलने के लिए जाया करता। एक बार शिकार के लिए जाते समय उसने अपनी दोनों बेटियों को बुलाकर अपने घर से थोड़ी दूर स्थित एक पहाड़ी की ओर इशारा करके बताया कि अगर मैं एक-दो दिन में शिकार से वापस न लौटूँ तो वहाँ जाकर मेरी तलाश करना।

तद्नुसार, जब उनके पिता नियत दिन पर नहीं लौटे तो दोनों बेटियों ने उन्हें खोजने के लिए सोचा। सबसे पहले वे जंगल में बनी हुई एक अस्थाई झोपड़ी में पहुंची, जहां शिकारी रात होने पर रुका करते थे। पर उन्हें वहाँ उनके पिता तो नहीं मिले, पर ताविये में उनके अवशेष जरूर मिल गए। इससे उन्होंने अंदाजा लगाया कि जरूर उनके पिता को आपापल्ली नामक नरभक्षी द्वारा खा लिया गया होगा। यह सोचकर दोनों बहनों ने आपापल्ली से बदला लेने की कसम खाई।

इसके बाद दोनों बहनों ने अपने पिता के खून के निशानों का पीछा करना शुरू किया और आखिर वे आपापल्ली के घर जा पहुंची। वहाँ उन्हें माँ आपापल्ली मिली। वे वहीं रहने लगी, कुछ समय बाद माँ आपापल्ली ने दोनों लड़कियों के सामने अपने बेटों तादो और तोकू के साथ विवाह करने का प्रस्ताव रखा उन्होंने तुरंत माँ आपापल्ली के प्रस्ताव को मंजूर कर लिया। शाम को जब तादो और तोकू घर लौटे तो उनकी मां ने उनकी सगाई कर दी और इसके कुछ ही समय बाद दोनों की शादी कर दी गई।

एक दिन पतियों के गहरी नींद में जाने के बाद पत्नियों ने अपने-अपने योशि बाहर निकाले और दोनों पतियों की जीभ काट डाली। पति कुछ नहीं बोल सके, बस बिस्तर पर दर्द से करवटें बदलते रहे। इसके बाद दोनों बहनों ने माँ आपापल्ली से अनुरोध किया कि वह कुछ देर मालकिन के रूप में घर की रखवाली करें ताकि वे बाहर पेशाब करके आ सकें। माँ आपापल्ली बिना किसी शक के अपनी जिम्मेदारी पूरी करने लगी और दोनों बहनें घर से निकलकर भाग निकलीं। भागने से पहले दोनों बहनें चूल्हे की राख और बांस की पिनें अपने साथ लेती गईं।

कुछ समय बाद जब मां आपापल्ली को असलियत समझ में आई तो उसने बहनों का पीछा करना शुरू कर दिया। जब दोनों बहनों ने यह देखा कि माँ आपापल्ली द्वारा उनका पीछा किया जा रहा है तो वे एक पल को रुक गई और माँ आपापल्ली की ओर राख को जोर से फ़ेंककर बोली- यह राख बर्फ़ में बदल जाए। बस क्या था, कुछ ही देर में चारों ओर बर्फ़ ही बर्फ़ हो गई और माँ आपापल्ली का रास्ता रुक गया।

बर्फ़ द्वारा माँ आपापल्ली का रास्ता अवरुद्ध करने के बाद, दोनों बहनों ने उसकी ओर सारे पिन फेंककर कहा- ये पिन गहरे जाल में बदल जाए। तो बांस के पिन तुरंत एक गहरे जाल में बदल गई, जिससे माँ आपापल्ली का पीछा करने का रास्ता पूरी तरह अवरुद्ध हो गया। इस तरह दोनों बहनों ने अपने पिता का बदला पूरा किया।

हास्य अथवा मनोरंजन संबंधी लोक कथाएँ

ऐसी कथाओं का मुख्य उद्देश्य श्रोताओं के लिए मनोरंजन की सामग्री प्रस्तुत करना होता है। छोटे बच्चे ऐसी कहानियों को तुरंत याद कर लेते हैं। ये कथाएँ प्राय: छोटी हुआ करती हैं। भिन्न-भिन्न जानवरों जैसे कुत्ता, साँप, बंदर, सुअर, बाघ, शेर, चिड़िया आदि से संबंध रखने वाली ये कहानियाँ बालकों का मनोरंजन करती हैं। इनमें वर्णित विषय गंभीर भी होते हैं किंतु प्राथमिकता हल्की फुल्की बातों को दी जाती हैं। उदाहरण के लिए बरिलूरा नामक कथा लें - यह बरिलूरा नामक एक चतुर न्यीशी लड़के की कथा है। कुछ समय के लिए एक बंदर और केंकड़े की दोस्ती हुई। दोनों ने तय किया कि केंकड़ा ईनिङ खोदेगा और बंदर उन्हें आग में भून दिया करेगा, फ़िर दोनों मिलकर उन्हें खाएंगे। एक दिन केंकड़े ने ईनिङ खोदे और उन्हें बंदर को भूनने के लिए देकर, खुद पानी लेने चला गया। बंदर ने उन्हें भूना जरूर, लेकिन अकेले ही खा गया। केंकड़े को कुछ नहीं दिया। कुछ देर बाद केंकड़े ने आकर बंदर से अपने हिस्से की मांग की। इस पर बंदर बचे हुए ईनिङ को लेकर पेड़ पर चढ़ गया और केंकड़े को बोला- मैं ऊपर से ईनिङ गिरा रहा हूँ, तुम उन्हें एक-एक कर लपको और खाओ। केंकड़े ने ईनिङ पाने की उम्मीद में अपने हाथ चौड़े कर लिए, पर बंदर ने ईनिङ नहीं, उसके छिलके नीचे फ़ेंके। जब केंकड़े के कहाँ कि ये तो तुमने छिलका फ़ेंका है। तब बंदर ने कहा कि मैंने तो ईनिङ ही फ़ेंके थे, हो सकता है, ईनिङ जमीन खा गई हो।

तब केंकड़े को बिना सोचे-समझे बंदर के साथ दोस्ती करने की मूर्खता का एहसास हुआ। वह मौका आने पर इसका बदला जरूर लेगा, समय का इंतजार करने लगा। केंकड़े ने अपने सभी रिश्तेदारों को इकट्ठा किया और उन्हें एक बंदर द्वारा खुद के ठगे जाने की दुख भरी कहानी सुनाई। यह सुनकर केंकड़े के सारे रिश्तेदार भी उचित समय आने पर बंदर से बदला लेने के लिए सहमत हो गए।

केंकड़े को पता था कि बंदर पानी के लिए तालाब पर जरूर आएगा। सो उसने खुद को पानी के नीचे छिपा लिया और उसका इंतजार करने लगा। उम्मीद के मुताबिक बंदर पानी पीने के लिए तालाब में आया और जैसे ही पानी पीने के लिए तालाब में अपना मुंह डाला, केंकड़े ने मजबूती से उसकी नाक पकड़ ली। दोनों के बीच खींचातानी शुरू हो गई। बंदर ने अपनी नाक छुड़ाने की भरपूर कोशिश की लेकिन केंकड़े ने अपने अनेक पैरों से उसे कसकर पकड़ लिया था, इसलिए बंदर कुछ नहीं कर सका। कुछ दिन इसी तरह गुजर गए। तब तक बंदर काफी कमजोर हो गया था। कई दिनों से खाने के लिए कुछ नहीं मिलने के कारण वह भूख से मरा जा रहा था। उसी समय एक बाघ पानी पीने के लिए तालाब पर आया था। बाघ को देखकर पर बंदर ने अपनी पूंछ हिलाकर केंकड़े द्वारा मौत के मुंह से निकालने का अनुरोध किया।

बाघ ने यह कहते हुए साफ़ मना कर दिया कि बंदर से उसकी कोई रिश्तेदारी थोड़े ही है, जो वह उसे बचाए। इस पर बंदर ने बाघ की यशोगाथा गाना शुरू कर दिया कि उसी के संरक्षण की वजह से वन में बंदर जैसे अनेक छोटे जानवर सुरक्षित महसूस करते हैं। अगर बाघ ने उसकी मदद नहीं की, तो उसे बहुत पाप लगेगा। इस पर बाघ को लगा कि उसे अपने कौशल के लिए पहचाना जा रहा है, उसने खुद पर गर्व महसूस किया और बंदर की मदद करने का मन बना लिया। उसने बंदर को पूंछ से पकड़कर जोर से खींचा, इससे बंदर तो केंकड़े की पकड़ से छूट गया, पर खुद बाघ पानी में गिर गया और उसकी नाक को केंकड़े ने अपने अनेक पैरों से कसकर पकड़ लिया।

जब बाघ ने केंकड़े से पूछा कि तुम ऐसा क्यों कर रहे हो तो केंकड़े ने कहा कि, उसकी वजह से वह बंदर से अपना बदला पूरा नहीं कर सका, अब जब बाघ ने बंदर से दोस्ती कर उसको छुड़ा दिया है, तो अब बाघ उसका दुश्मन हो गया है, सो अपना बदला वह बाघ से पूरा करेगा। हालांकि केंकड़े की तुलना में बाघ काफी मजबूत और बड़ा था, पर केंकड़े ने उसकी नाजुक नाक को पकड़ा हुआ था और खुद पानी में एक पत्थर के नीचे छुपा हुआ था, इसलिए बाघ चाहकर भी कुछ नहीं कर पाया। इसी तरह कुछ दिन बीत गए। कुछ खाने को नहीं मिलने और कई दिन से पानी भी नहीं पी सकने के कारण बाघ बहुत कमजोर और मरियल हो गया। एक दिन बाघ ने देखा कि एक लड़का हाथ में मछली पकड़ने का काँटा लिए गुजर रहा था। वह बहुत गरीब लग रहा था। उसके कपड़े फटे हुए और गंदे थे। वास्तव में वह लड़का अनाथ था। बाघ ने उससे अपनी मदद की गुहार लगाई और केंकड़े से बचाने को कहा। लेकिन लड़का एक बाघ को देखकर डर रहा था, इसलिए वह दूर से ही बात कर रहा था। तो बाघ ने थोड़ी समझदारी दिखाते हुए कहा कि, उसे पता है कि लड़का अनाथ है। इस दुनिया में कोई उसकी मदद करने वाला नहीं है। अगर वह अभी बाघ की केंकड़े से बचाने में मदद कर देगा तो बाघ न केवल उसे नुकसान नहीं पहुंचाएगा बल्कि जीवन भर उसके लिए शिकार ढूँढ़ने में मदद करेगा।

इस पर लड़के को आश्चर्य हुआ कि बाघ उसे कैसे पहचान सकता है। खैर, लड़के ने बाघ की मदद करने की सोची और अपने मछली के काँटे से उसे केंकड़े से छुड़वा दिया।

केंकड़े से छूटते ही बाघ ने कुछ दूरी तक दौड़ लगाई, फिर वह रुक गया और मुड़कर लड़के को आवाज लगाई। लड़का उसके पास जाने में डर रहा था, पर बाघ ने उसे अपनी शर्त याद दिलाते हुए कहा कि, वह हमेशा उसका शिकार में मदद करेगा, लेकिन एक शर्त है, उसे कभी किसी के सामने इस राज को नहीं खोलना है, अगर ऐसा हुआ तो बाघ नाराज हो जाएगा और लड़के को मार डालेगा।

इसके बाद लड़का वहाँ से चला आया और जंगल में ऐसे ही घूमने लगा। वहाँ उसने भैंसों का एक झुंड देखा। झुंड में एक भैंस को बाँईं आँख से नहीं दिखता था। लड़का भूखा-प्यासा था, जब उसने देखा कि भैंस की बाँई आंख में रोशनी नहीं है, तो उसने बाँईं ओर जाकर भैंस के बाँएँ थन को पकड़ा और उसका दूध पी लिया। भैंस को लगा यह उसका अपना बच्चा है, सो उसने कोई आपत्ति नहीं की। जब दिन में भैंसों का झुंड चरने चला जाता, तो लड़का रोज उस भैंस का दूध पीकर चला जाता और रात होने से पहले ही जंगल में जाकर छिप जाता। जब शाम में भैंस के पड्डे लौटकर आते तो उन्हें अपनी माँ के थनों में दूध ही नहीं मिलता। उन्हें समझ ही नहीं आया कि ऐसा कैसे हो रहा था। जब उन्होंने माँ से पूछा तो वह नाराज होते हुए बोली कि तुम दो-दो बार मुझसे दूध कैसे माँग सकते हो, जब दिन में खुद ही आकर दूध पी जाते हो! पड्डों ने इसका खंडन किया। लेकिन जब यह प्रक्रिया आगे भी चलती रही तो पड्डों ने इसका पता लगाने की योजना बनाई।

तद्नुसार एक दिन वे असलियत जानने के लिए चरने की जगह पर जाकर पास ही में छिप गए। कुछ देर बाद उन्होंने जंगल से आ रहे एक लड़के को देखा, जो बाईं तरफ से उनकी माँ का दूध पीने लगा, क्योंकि उसे बाँईं ओर से दिखता नहीं था। जब पड्डों ने उसे देखा तो वे बाहर आ गए और लड़के को पकड़ लिया। लड़का डर के मारे गिड़गिड़ा कर अपने अनाथ और गरीब होने की बात बताकर जान की भीख मांगने लगा। पड्डों को उस पर दया आ गई। तब लड़के ने उनसे यह समझौता किया कि अब से जब भी वे चरने जाएंगे, लड़का उनकी माँ की देखभाल करेगा, बदले में उसे दूध मिलेगा। पड्डे मान गए। धीरे-धीरे समय बीतता गया। भैंस काफ़ी बूढ़ी

हो गई और एक दिन मर गई। इस पर पड्डों ने, जो अब बड़े हो चुके थे, लड़के को भैंस की खाल और आँत निकालकर सुखा लेने को कहा। साथ ही, उसके सीगों से दो पाइप बनाने के लिए कहा। इसके बाद पड्डों ने उससे कहा कि जब वे घास चरने के लिए जंगल में दूर जाएंगे और लड़के को किसी भी तरह का खतरा महसूस होगा तो वह बाई सींग के पाइप को मुंह से बजाएगा और यदि उसे भूख लगेगी तो दाँईं सींग के पाइप को बजाएगा। कुछ समय तक व्यवस्था चलती रही।

एक दिन लड़का हाथ में भूख लगने पर बजाने वाला पाइप लिए एक पत्थर पर बैठा था। खतरा महसूस होने पर बजाने वाला पाइप एक ओर रखा हुआ था। तभी वहाँ एक कौवा आया जिसने अपनी चोंच में एक आम पकड़ा हुआ था। उसने लड़के से अनुरोध किया कि आम के बदले में वह एक पाइप उसे दे दे। लड़के ने उसकी बात नहीं मानी, तो कौए ने चालाकी दिखाई। उसने जिस ओर लड़का बैठा था, उसकी उल्टी दिशा में आम गिरा दिया। लड़का ज्यों ही उसे देखकर उठाने के लिए झुका, कौआ आया और खतरे वाला पाइप उठाकर उड़ गया।

कौए ने उस पाइप को ले जाकर दूर एक मैदान में डाल दिया कुछ समय बाद जब लड़के ने अपने हाथ वाले पाइप को बजाया तो पड्डे आ पहुंचे। पर लड़के के पास आकर उन्हें मैदान की ओर से खतरे वाला पाइप बजने की आवाज आई। उन्हें बहुत अजीब लगा और लड़के से इसका कारण पूछा। लड़के ने उन्हें सारी बात बता दी।

दोनों ने लड़के को सलाह दी कि वह मैदान में जाए और उस पाइप को खोज कर बजाए। जैसे ही उसकी आवाज आएगी, भैसों का पूरा झुंड मैदान में पहुंच जाएगा और लड़के को पाइप समेत सुरक्षित वापस ले आएगा। उन्होंने लड़के को सलाह दी कि वह जाते समय रास्ते में जगह-जगह उनकी मां की खाल के टुकड़े डालता जाए ताकि भैंसों के झुंड को उस तक पहुंचने का रास्ता खोजने में सुविधा हो।

योजना के अनुसार लड़का नीचे मैदान में गया और पाइप को खोजने लगा। कुछ देर में वह उसे मिल गया पर साथ ही मैदान में उसे अनेक मनुष्य भी मिल गए, जिन्हें देखकर उसे बहुत खुशी हुई और वह भैंसों वाली बात भूल गया। कुछ दिन बाद जब उसे भैंसों की बात याद आई तो उसने मैदान में मिले पाइप को बजाया। योजना के मुताबिक सारी भैंसे उसके द्वारा चिह्नित किए गए रास्ते से होते हुए लड़के तक पहुंच गईं और उन्होंने जोर-जोर से रंभाना शुरू कर दिया। जिसे देखकर लड़के ने उनको रोकते हुए कहा कि ये सारे मनुष्य उसके अपने हैं, दुश्मन नहीं हैं, इसलिए आप शांत हो जाओ। इनसे कोई डर नहीं है।

खैर, भैंसें शांत हो गईं और उन्होंने लड़के को अपने साथ वापस जंगल में चलने का अनुरोध किया, लेकिन उसने उन्हें मना कर दिया और कहा कि यह मैदान ही उसका असली निवास-स्थान है। लड़के ने भैंसों को सलाह दी कि उनके झुंड में जितनी भैंसें चाहें, उसके साथ यहीं मैदान में रुक जाएँ और जो भैंसे वापस जाना चाहें, आराम से जंगल में वापस चली जाएँ। कुछ भैंसे उसकी बात पर मान कर रुक गईं और लड़के तथा अन्य मनुष्यों के साथ रहने लगीं। बाकी भैंसे वापस जंगल में चली गईं। न्यीशी समुदाय का मानना है कि जो भैंसे उस लड़के के साथ मैदान में रुक गईं, वे सब पालतू भैंसें बन गईं और जो-जो जंगल में चली गई वे सब मिथुन बन गए।

अब लड़का बड़ा हो चुका था और बाघ की शर्त के अनुसार उसे रोज अच्छा शिकार मिल जाता था। समाज में उसकी एक अच्छे शिकारी के रूप में पहचान बन चुकी थी। उसके आस-पास के लोग इस बात पर हैरान थे कि वह जब भी बाहर जाता, उसे हमेशा बढ़िया शिकार कैसे मिल जाता था। सबने उससे शिकार की कला के बारे में जानना चाहा, लेकिन उसने बाघ से हुई शर्त के मुताबिक हर बार इस रहस्य को बताने में टाल मटोल की। लेकिन पड़ोसियों द्वारा बार-बार पूछे जाने पर तथा कोई मुसीबत आएगी तो मिलकर उसकी मदद करने का आश्वासन दिए जाने पर उसने सच्चाई बताने का मन बना लिया। उसने जैसे ही बाघ के साथ हुई कहानी खत्म की, वहां अचानक वही बाघ प्रकट हो गया और लड़के को सबके बीच से उठाकर जंगल में लाकर एक बड़े से पत्थर के पीछे छुपा दिया। उसके बाद बाघ सोचने लगा कि उसे अभी मार कर खा जाए या कुछ देर बाद। वह इसी सोच में था कि लड़के को बहुत भूख लग आई। उसके पेट से गुड़गुडी की आवाज आने लगी। इस पर बाघ ने पूछा कि यह कैसी आवाज थी। लड़के ने कहा कि उसके पेट में वही केंकड़ा है, उसके मां-बाप ने बचपन में उसे खिलाया था और अब वह बाघ का सामना करने के लिए बाहर आने को मचल रहा है। यह सुनते ही बाघ बुरी तरह डर गया और अपनी जान बचाकर भागा। इस तरह लड़के ने समझदारी से अपनी जान बचा ली और वापस अपने न्यीशी समुदाय में लौट आया।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. नाबाम, प्रो. नाकाहिना. (2012). *कटमरी लॉ ऑफ न्यीशी ट्राइब ऑफ अरुणाचल प्रदेश*. नई दिल्ली: ऑथरप्रेस ग्लोबल नेटवर्क.
2. ताना, सोरेन विलीव. (2022). *मेमोरी एंड इंस्टीट्यूट*. गुवाहाटी: देवाप्रकाशन.
3. साक्षात्कार-श्री नीति साङदो, वर्ष-70 न्यूबो, ईस्ट कामिंग जिले, सिला गाँव, 10/08/2023
4. नावुम, ताता. (2019). *न्यिताम*. अरूणाचल प्रदेश: न्यदर नामलो.
5. Tana, Showren. (2009). *The Nyshi of Arunachal Pradesh, An Ethno Historical Study*. New Delhi: Regency Publication.
6. अग्रवाल, अनसूया. (2009). *हिंदी लोक साहित्य शास्त्र सिद्धांत और विकास*. नई दिल्ली: नीरज बुक सेंटर.
7. अंसारी, परवीन निजाम. (2016) *लोक साहित्य के विविध आयाम*. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन.
8. उपाध्याय, कृष्णदेव. (1957). *लोक साहित्य की भूमिका*. नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन.
9. उपाध्याय, डॉ. कृष्णदेव, भारत के लोक साहित्य, साहित्य भवन, इलाहाबाद, 1985

*(**लेखकीय परिचय :** डॉ. जोराम आनिया देरा नातुङ शासकीय महाविद्यालय, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश के हिंदी विभाग में सह प्रोफेसर हैं। आप अरुणाचल प्रदेश की साहित्यिक अभिरूचि की विभिन्न गतिविधियों में निरंतर सक्रिय हैं और अरुणाचल प्रदेश में युवा लेखन को प्रोत्साहन देने में जुटी हैं। मोबा: 7005147047, ई-मेल : drjoramaniya@gmail.com)*